उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय, देहरादून

कुल–गीत

जय–जय हे कुल भूमि महान !
देव भूमि का गौरव हो तुम,
सरस्वती का हो वरदान !! जय जय हे.....

दिव्य प्रदीप ज्ञान के जलते
विश्व–शान्ति के सपने पलते,
सृजन–राह पर नित हम चलते,
बाँटे यत्र–कला का ज्ञान ! जय जय हे.....

हिम–शिखरो से हो मंडित तुम,
दिव्य ऋचाओ से गुंजित तुम,
गंगा–यमुना–जल–सिंचित तुम,
देव भूमि का गरिमा–गान ! जय जय हे.....

अभियंत्रण का शुभ प्रसार हो,
नीति–समर्पित सद् विचार हो,
भ्रातृ–भाव सब में अपार हो,
सब धर्मो का हो सम्मान ! जय जय हे.....

नित्य प्रगति का देखें सपना,
सारा विश्व कुटुंब हो अपना,
दूजो के हित सीखें तपना,
राष्ट्र–धर्म हो सबका मान ! जय जय हे.....

सब की प्रगति ध्येय हमारा,
ज्ञान–प्राप्ति हैं लक्ष्य हमारा,
मानव–सेवा प्रेय हमारा,
नित पाएँ सर्वोत्तम ज्ञान ! जय जय हे.....

रचयिता

दिनांकः–02.02.2016

डॉ योगेन्द्र नाथ शर्मा "अरूण"